IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गाँधी एवं स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों के परिप्रेक्ष्य में योगदान

रवीन्द्र प्रताप सिंह ' एवं डॉ0 अंजू कंसल''
'पी–एच.डी. शोध छात्र (शिक्षाशास्त्र), निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)
''असिस्टेंट प्रोफेसर–शिक्षाशास्त्र विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

सारांश

आज संसार के अधिकतर विद्यालयों में साधन की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है साध्य की ओर नहीं। साधन का अपना कोई महत्व नहीं होता है इसका महत्व साधन के सन्दर्भ में ही होता है। षिक्षण का स्वरूप षिक्षा दर्षन ही निर्धारित करता है। अतः षिक्षक के लिये आवष्यक हो जाता है कि वह षिक्षा दर्षन से परिचित हो। षिक्षा दर्षन का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है उसके अन्तर्गत कई दर्षन सम्मिलित है यथा–पावकि षिक्षा दर्षन, जैन षिक्षा दर्षन, बौद्ध षिक्षा दर्षन, उपनिशद षिक्षा दर्षन, गीता षिक्षा दर्षन, षिक्षा–दर्षन, सांख्य षिक्षा दर्षन, योग षिक्षा दर्षन, न्याय षिक्षा दर्षन, वैषेशिक षिक्षा दर्षन, मीमांसा षिक्षा दर्षन, वेदांत षिक्षा दर्षन। महात्मा गांधी एवं स्वामी विवेकानन्द के पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, गुरू शिष्य सम्बन्ध, अनुशासन व्यवसायिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा एवं शिक्षा की प्रमुख विशेषताओं जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार किया को मुख्य सीमा निर्धारित किया है।

प्रस्तावना

राष्ट्र के रूप में हम शिक्षा में इतने पिछड़े हुए हैं कि यदि हमने शिक्षा का यह कार्यक्रम धन पर आधारित किया तो हम राष्ट्र के प्रति शिक्षा के अपने कर्तव्य को इस पीढ़ी में एक निश्चित समय में पूर्ण करने की आशा नहीं कर सकते हैं, शिक्षा आत्मनिर्भर होनी चाहिए। शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे और मनुष्य की सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास है। साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ यह तो केवल अनेक साधनों में एक साधन है जिसके द्वारा मनुष्य को शिक्षित किया जा सकता है। साक्षरता स्वयं शिक्षा नहीं है। अतः मैं बच्चों की शिक्षा उसे एक उपयोगी हस्तकला सिखाकर और जिस समय से वह अपनी शिक्षा आरम्भ करता है। उसी समय से यह उत्पादन करने के योग्य बनाकर आरम्भ करना चाहता हूँ, इस प्रकार यदि राज्य स्कूलों में निर्मित की जाने वाली वस्तुओं को खरीद लें तो प्रत्येक बच्चे को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

गांधी जी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थ और मनुष्य की किसी प्रकार की भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे उतना ही आवश्यक मानते थे जितना बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध। यही कारण है कि इन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने पर बल दिया और उसे निःशुल्क करने की बात कही। इनका स्पष्ट मत था कि यह शिक्षा विदेशी भाषा अंग्रेजी माध्यम से ही दी जा सकती है। वैसे भी वह अंग्रेजी को मानसिक दासता बढ़ाने वाली भाषा मानते थे। ये शिक्षा द्वारा मनुष्य को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। उसे अपनी रोजी–रोटी कमाने योग्य बनाना चाहते थे इसलिए इन्होंने हस्तकौशलों की शिक्षा पर विशेष बल दिया साथ ही ये मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी करना चाहते थे। इसलिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को एक आदर्श व्रत (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह और विनम्रता) पालन को ओर प्रवृत्त करने पर बल दिया। गांधी जी ने अपने इस शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दिया।

गांधी जी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। इनके शब्दों में साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ यह केवल एक साधन है। गांधी जी मनुष्य को शरीर, मन, हृदय और आत्मा का योग मानते थे। इनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा को मनुष्य के शरीर मन, हृदय और आत्मा का विकास करना चाहिए। गांधी जी 3ट ;त्मंकपदहए ॅतपजपदहए ।तपजीउमजपबद्ध ने की शिक्षा को 3भ ;भ्ंदकए भ्मंक ंदक भ्मंतजद्ध की शिक्षा में बल दिया। गांधी जी के शब्दों में ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है।''

स्वामी विवेकानन्द ने यह सिद्ध कर दिया है कि धर्म में साम्प्रदायिकता, संकीर्णता धर्मान्धता इत्यादि के लिये कोई स्थान नहीं है। उन्होंने अमेरिकावासियों को 'बहिनों और भाईयों' सम्बोधित कर विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिकता का पाठ पढ़ाया है। वेदान्त और वि7ज्ञान का समन्वय चाहते थे। वह जानते थे कि जब तक हिन्दू धर्म की बौद्धिक और वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत

नहीं की जायेगो, तब तक वह पाश्चात्य जगत को स्वीकार नहीं होगी। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू–धर्म और दर्शन पर विशेष बल दिया और अन्त तक इसी कार्य में रत रहे।

शिक्षा को जीवन की सर्वाधिक अनिवार्य आवश्यकता मानते थे। उनके अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर द्वारा निर्मित है। वह आत्मा को परमात्मा का अंश मानते थे। उनका मत था कि प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का अंश आत्मा है। वह ईश्वर व प्रत्यक्ष जगत दोनों को वास्तविक मानते थे, अतः जीवन के उद्देश्यों में उन्होंने प्रत्यक्ष जगत व परलोक दोनों को स्थान दिया। शिक्षा को जीवन का लक्ष्य की प्राप्ति का प्रमुख साधन मानते हुए उन्होंने शिक्षा की व्याख्या एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में की, जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करता है। भौतिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा– वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है। उन्होंने शिक्षा को आध्यात्मिक एकात्म भाव की अनुभूति का साधन मानते हुए कहा–*''सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।''*

यहाँ सम्पूर्ण सृष्टि से उनका तात्पर्य संसार के जड़–चेतन, सजीव–निर्जीव व चर–अचर सभी प्रकार की वस्तुओं से है। सामंजस्य स्थापित करने से उनका तात्पर्य मनुष्य की समस्त शक्तियों को पूर्णरूप से विकसित करके उन्हें उच्चतम बिंदु पर पहुँचाने से है। विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा का तात्पर्य पूर्ण मनुष्यत्व के विकास की प्रक्रिया से है। शिक्षा को मनुष्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता मानते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य भौतिक प्रगति करता है और आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति करता है। भौतिक दृष्टि से शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है–*''वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है।''* पर साथ ही विवेकानन्द सृष्टि के कण–कण में ईश्वर को व्याप्त मानते थे और यह मानते थे कि जीवन का अन्तिम उद्देश्य इस आध्यात्मिक एकात्म भाव की अनुभूति करना है। इनकी दृष्टि से यह शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य या कार्य है। इनके अपने शब्दों में *''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है।''*

शिक्षा का पाठ्यक्रम

गांधी जी के विचार से पाठ्यक्रम ऐसा नहीं होना चाहिए कि उससे केवल बौद्धिक विकास हो। बौद्धिक विकास तो केवल साहित्यिक विषयों से हो सकता, किन्तु उनसे शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं है। प्रचलित शिक्षा में शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास की उपेक्षा की गयी है। केवल मस्तिष्क को शिक्षित करने का प्रयत्न किया है। गांधी जी के अनुसार– ''यदि पाठ्यक्रम में किसी क्राफ्ट को केन्द्रीय स्थान दिया जाए तो प्रचलित शिक्षा के दोष दूर हो सकते हैं। अतः उन्होंने क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम को योजना बनायी।''

इस नवीन पाठ्यक्रम में क्राफ्ट को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। क्राफ्ट कोई भी हो सकता है। भारतीय समाज की दृष्टि से कृषि, कताई, बुनाई, गत्ते का कार्य, लकड़ी का काम, धातु का काम आदि में से एक क्राफ्ट को चुना जा सकता है। कताई बुनाई की ओर विशेष रूचि प्रदर्शित की गयी। इस पाठ्यक्रम में मातृभाषा को प्रमुख स्थान दिया गया। शिक्षा के माध्यम के रूप में भी मातृभाषा को ही स्वीकार किया गया। गणित, सामाजिक विज्ञान, ड्राइंग तथा संगीत भी पाठ्यक्रम में अवश्य होने चाहिए। सामान्य विज्ञान को भी रखा गया सामान्य विज्ञान में जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान, रसायनशास्त्र, स्वास्थ्य विज्ञान, प्राकृतिक अध्ययन, भौतिक, सांस्कृतिक तथा नक्षत्र ज्ञान के सामान्य तत्व निहित हैं।

गांधी जी का यह पाठ्यक्रम प्राथमिक एवं लघु माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है। उन्होंने सर्वाधिक विचार इसी स्तर के लिए किया। उनकी नवीन शिक्षा योजना लोगों के बीच नई तालीम, बुनियादी शिक्षा, आदि के नाम से सामने आयी। पांचवी कक्षा तक बालकों एवं बालिकाओं के लिए एक ही प्रकार का पाठ्यक्रम होना चाहिए। इसके बाद बालिकाओं को सामान्य विज्ञान के स्थान पर गृह विज्ञान पढ़ाना चाहिए।

गाँधी जी ने पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषयों को स्थान दिया।

बेसिक क्राफ्ट– 1. कृषि 2. लकड़ी का काम 3. धातु का काम 4. गत्ते का काम 5. कताई बुनाई

मातृभाषा– गाँधी जी पाठ्यक्रम में मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम मानते थे और उसी के अनुसार शिक्षा देने के समर्थक थे। सच्चे अर्थ में मातृभाषा द्वारा ही उत्तम ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।

गणित– इस विषय के अन्तर्गत क्राफ्ट एवं सामुदायिक जीवन से सम्बन्धित संस्थाओं एवं रेखागणित की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

सामाजिक विषय– इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र।

स्वास्थ्य विज्ञान– सफाई, व्यायाम, खेलकूद आदि।

सामान्य विज्ञान– इसमें निम्न विषयों का समावेश होता है– जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, शरीर विज्ञान, प्रकृति विज्ञान, भौतिक संस्कृति तथा नक्षत्र विज्ञान।

साहित्य तथा कला– इसके प्रति वास्तविक रूचि उत्पन्न करना बालिकाओं को क्राफ्ट तथा सामान्य विज्ञान क स्थान पर गृह विज्ञान को पढ़ने की व्यवस्था की। पाठ्यक्रम में गाँधी जी ''आत्मा'' को शिक्षित करने को बड़ा महत्व देते थे। इसके अतिरिक्त वे सामान्यतः धार्मिक और नैतिक शिक्षा को भी बहुत महत्व देते थे। पाठ्यक्रम में वे औद्योगिक शिक्षा, दस्तकारी आदि की शिक्षा का इसलिए अनिवार्य मानते थे कि इससे बच्चों में स्वाभाविक रूप से अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।

स्वामी विवेकानन्द समन्वयवादी थे। अतः आत्मा परमात्मा की एकात्मकता को जीवन का परम् लक्ष्य मानते हुये भी उन्होंने पाठ्यक्रम में केवल आध्यात्मिक विशयो को ही सम्मिलित नहीं किया। एक सच्चे वेदान्ती की भाँति उन्होंने स्वीकार किया कि यह मानव षरीर की मोक्ष प्राप्त करने का दुलर्भ साधन है, अतः षिक्षा के पाठ्यक्रम में उन सभी विशयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिनसे षरीर रक्षा, और षारीरिक आवष्यकता की पूर्ति की जा सकती है। स्वामी जी व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं

भौतिक विकास को ही षिक्षा का उद्देष्य मानते थे इसीलिए उन्होंने पाठ्यक्रम में वे सभी विशय सम्मिलित करने को कहा जो उनकी लौकिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायक हो। उन्होंने विशयों को निम्न प्रकार पाठ्यक्रम में निहित करने को कहा–

आध्यात्मिक विषय– पुराण, उपनिशद, धर्म, दर्षन, ज्ञानोपदेष, सत्संग एवं कीर्तन आदि।

लौकिक विषय– भाशा, साहित्य, भूगोल, राजनीति, अर्थषास्त्र, विज्ञान मनोविज्ञान, कला, कृशि, तकनीकी विशय, खेलकूद, व्यायाम आदि। व्यावसायिक विशयों का समावेष षिक्षा में व्यावहारिक बनाने के लिए आवष्यकतानुसार होता है।

शिक्षण विधियाँ

गांधीजी ने अपनी शिक्षण–विधि में निम्नलिखित आधारभूत सिद्धान्तों को स्थान दिया है–

- *क्रिया द्वारा सीखना* :–गांधी जी ने अपनी शिक्षण विधि में क्रिया द्वारा सीखनें को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसीलिए उन्होंने अपने बेसिक शिक्षा में किसी हस्तकला को केन्द्र मानकर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की है क्योंकि इसके द्वारा बालको ंको क्रिया द्वारा सीखने का अत्याधिक अवसर प्राप्त होता है।
- *शारीरिक अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग करके सीखना* :–गांधी जी ने लिखा है कि ''मझे विश्वास है कि मास्तिष्क की सच्ची शिक्षा शारीरिक अंगो हाथ–पैर आंख नाक कान आदि के उचित अभ्यास और प्रशिक्षण से प्राप्त की जा सकती है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर गांधीजी का विचार है कि बालको ंको लिखना सिखाने के पहले पढना एवं वर्णमाला के अक्षर सिखाने के पहले डाइग सिखानी चाहिये।
- *सीखने की प्रक्रियाओं में समन्वय विधि का प्रयोग* :–गांधी जी ने सीखने की प्रक्रिया में विभिन्न विषयों में समन्वय स्थापित करने में विशेष बल दिया है। उनके अनुसार एक तो किसी महत्वपूर्ण हस्तकला के इर्द–गिर्द अन्य विषयों को रखकर उनका अध्ययन करना चाहिए तथा दूसरे विभिन्न विषयों में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करते हुए अध्यापन करना चाहिए।
- *अनुभव द्वारा सीखना* :–गांधी जी का विचार है कि जो ज्ञान अनुभव द्वारा प्राप्त होता है वह अधिक स्थायी होता है तथा उपयोगी सिद्ध होता है। बालक इस ज्ञान का सफलतापूर्वक व्यावहारिक जीवन म स्थानान्तरण कर सकते है।
- *वचन विचार तथा कर्म द्वारा सीखना* :–गांधी जी ने भारतीय शिक्षण पद्वति के श्रवण मनन तथा निदिध्यासन इन तीनों स्तरों को विचार वाचन तथा कर्म द्वारा सीखने के रूप में ग्रहण किया है। यदि इनमें से किसी के अभाव में कोई ज्ञान प्राप्त किया जाएगा तो वह अस्थायी तथा अनुपयोगी होगा।
- *पाठ्य–पुस्तकों के अत्याधिक प्रयोग का विरोध* :–शिक्षण विधि में पाठ्य पुस्तक के प्रयोग के गांधी जी घोर विरोधी थे। उनका कहना है कि विद्यार्थी की पाठ्य पुस्तक स्वयं शिक्षक ही होता है। वे मौखिक शिक्षा पर अधिक बल देते थे। जिस मौखिक विधि पर वह बल देते थे वह प्रश्नोत्तर विधि थी और स्वयं सीखने पर आधारित थी।

गाँधी जी ने जिन शिक्षण विधियों का प्रयोग करने पर बल दिया है वे आज की सर्वाधिक प्रचलित है। करके सीखना, स्वानुभव द्वारा सीखना, स्वाध्याय द्वारा सीखना आदि विधियाँ आज भी प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है तथा शिक्षण प्रक्रिया में विशेष योगदान प्रदान कर रही है।

स्वामी विवेकानन्द प्राचीन भारतीय षिक्षण विधियों के समर्थक थें विषेश रूप से योग दर्षन की एकाग्रता पद्यति को वे सर्वोत्तम मानते थे। उनके अनुसार मनुश्य और पषु में मुख्य अन्तर यही हैं कि पषु अपने मन को एकाग्र नहीं कर सकते। इसी प्रकार साधारण मनुश्य और महान व्यक्तियों की उपलब्धियों में भी अन्तर एकाग्रता के कारण ही आता है। साधारण मनुश्यों का मन चंचल होता है अतः वह किसी भी एक विशयवस्तु पर मन को अधिक देर तक स्थिर नहीं रख सकते। विवेकानन्द जी के अनुसार चित्त की एकाग्रता ही षिक्षा का प्रमुख तत्व है, मात्र तथ्यों का संकलन नहीं। इस प्रकार विवेकानन्द जी ने उन षिक्षण पद्यतियों पर बल दिया जो व्यक्ति के आध्यात्मिक, ज्ञानात्मक एव भौतिक विकास में योगदान दे सके। इसके लिये मुख्य रूप से निम्न पद्यतियों को अपनाने को कहा।

- *योग पद्धति*– चित्त एवं इन्द्रियों को नियन्त्रण में करने के लिये।
- *ध्यान पद्वति*– मन में आध्यात्मिक उद्देष्य की ओर केन्द्रीकृत करने के लिये।
- *ज्ञानार्जन पद्धति*– विचार विमर्ष विधि, व्याख्यान विधि, तर्क वितर्क विधि, षास्त्रार्थ पद्धति, क्रिया विधि, मनन एवं चिन्तन विधि।
- *अनुकरण पद्धति*– शिक्षक के आदर्शो एवं आचरण का अनुकरण करके विद्यार्थियों द्वारा सीखना।
- *निर्देशन एवं परामर्श विधि*– शिक्षक द्वारा दिये गये निर्देषन एवं उचित परामर्श द्वारा विशिट ज्ञान अथवा कौशल अर्जित करना।

परीक्षा की वर्तमान प्रणाली बुद्धि से कही अधिक स्नायुओं की परीक्षा प्रतीत होती हैं। छात्र के भावी जीवन का निर्धारण करने वाले कोर्स के अन्त में होने वाली एकमात्र परीक्षा बहुतों के द्वारा एक संकट के रूप में देखी जाती है। छात्र का सारा ध्यान इसी एक बिन्दु पर केन्द्रित हो जाता है। परीक्षा के कई माह पहले से ही येनकेन प्रकारेण इसमें उत्तीर्ण हो जाना ही उसकी एकमात्र चिन्ता हो जाती है। आरोग्य तथा स्वास्थ्य के सारे नियम ताक पर रख दिये जाते है और आधी रात तक पढ़ना ही अधिकांश विद्यार्थियों की नियमित दिनचर्या बन जाती है। वे परीक्षा देने के लिये अपने स्वास्थ्य तथा षक्ति को दाँव पर लगा देते है। और काम इतने से नहीं बनता। हर प्रकार के नोट्स, गाइडों, डाइजेस्टों, प्रश्नोत्तरों आदि को दिमाग में ठूँस देने पर विषेश बल दिया जाता है।

स्वामी जी की मान्यता है कि बालक के सभी प्रकार के लौकिक व आध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार अन्तर्निहित होते हैं। जिस प्रकार वृक्ष एवं पौधे स्वयं ही फलते फूलते एवं विकसित होते है, उसी प्रकार बालक भी स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं, उसको केवल शिक्षक के मार्गदर्षन की आवष्यकता पड़ती है। उन्होंन बालकों को कहा– *''अपने अन्दर जाओ, तथा अपने अन्दर से उपनिशदों को बाहर निकलो। तुम सबसे महान पुस्तक हो, इस जैसी न कभी थी और न कभी होगी। जब तक अन्दर का शिक्षक नहीं खुलता, समस्त बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।''*

शिष्य के लिए जरूरी है कि उसमें पवित्रता सच्ची ज्ञान पिपासा और अध्यवसाय हो। धार्मिक होने के लिए तन, मन, और वचन की षुद्धता परम आवष्यक है। जिस वस्तु की हम सच्चे दिल से चाह नहीं करते वह हमें नहीं मिलती उसके लिए तो जब तक हमारे हृदय में सच्ची व्याकुलता न उत्पन्न हो जाये जब तक हमें अपनी प्रवृत्तियों पर विजय न मिल जाये तब तक सतत् अभ्यास और अपनी आष्विक प्रकृति के साथ संग्राम करते रहना होगा। जो षिश्य इस प्रकार अध्यवसायपूर्वक साधना में लगता है उसे सिद्धि अवष्य मिलती है। गुरू के प्रति श्रद्धा, नम्रता, विनय, तथा आदर के बिना हममे धर्मभाव पनप ही नहीं सकता।

स्वामी विवेकानन्द जी परतन्त्र भारत में देश की अशिक्षित, भूखी, निर्धन जनता को देखकर बड़े दुखी हुए। करोड़ो मनुश्यों को अज्ञान, अंधविष्वास और घोर दरिद्रता में पलते हुये देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा था और उन्होंने कहा था षिक्षा का अधिकार सामान्य जनता तक पहुँचना चाहिये, क्योकि वेदान्त की षिक्षा सबके लिए है। स्वामी जी यह आवष्यक समझते थे कि प्रत्येक व्यक्ति यह जाने कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है और यदि वह षिक्षा प्राप्त करने के लिये विद्यालय नहीं आ सकता, तो देष के नवयुवकों और सन्यासियों को षिक्षा देने के लिये उसके पास पहुँचना चाहिये। राष्ट्रीय बेसिक शिक्षा में प्राथमिक स्तर पर पुरूष शिक्षकों के स्थान पर महिला शिक्षिकाओं को वरीयता दी जाये। साथ ही इस बात पर बल दिया कि प्राथमिक शिक्षक कम से कम मैट्रिक पास हो और शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त हो।

शिक्षार्थी– गांधी जी छात्रों से अपेक्षा करते थे कि वे ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करें। समाज सेवा कार्यों में भाग लें और आत्मनिर्भर बनें।

विद्यालय– विद्यालयों के विषय में गांधी जी का एक नया दृष्टिकोण था– प्रथमतः तो यह विद्यालयों को ऐसी कार्यशालाओं के रूप में विकसित करना चाहते थे जहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों श्रम करें। जहाँ हस्तकौशलों द्वारा वस्तुओं का निर्माण हो और विद्यालय में निर्मित वस्तुओं से विद्यालयों का व्यय निकले। वे आत्मनिर्भर हो। दूसरे ये इन्हें सामुदायिक केन्द्रों के रूप में विकसित करना चाहते थे ये चाहते थे कि विद्यालय और समुदाय के बीच सहयोग हो और ये दोनों एक दूसरे के क्रियाकलापों में भाग लें। विद्यालयों से ये यह भी अपेक्षा करते थे कि वे संध्या अथवा रात के समय प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था करें।

अनुशासन– गांधी जी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुशासन का होना आवश्यक मानते थे। शिक्षा के क्षेत्र में भी। ये आत्म प्रेरित अनुशासन के पक्षधर थे। विद्यालयों में इस अनुशासन के विकास के लिए इन्होंने प्रभावात्मक विधि का समर्थन किया है। इनके अनुसार शिक्षकों को बच्चों के सामने आदर्श आचरण प्रस्तुत करना चाहिए जिसका अनुकरण कर बच्चे अनुशासन में रहना सीखें और यदि कोई बच्चा फिर भी अन्यथा आचरण करे तो शिक्षक उसे अपने आत्मबल से सही मार्ग पर लगाये। गांधी जी किसी भी स्थिति में बच्चों को दण्ड देने के पक्ष में नहीं थे। अनुशासन स्थापित करने की विधियों को एडम महोदय ने तीन वर्गों में बांटा है– दमनात्मक, प्रभावात्मक और मुक्त्यात्मक। इसमें कोई संदेह नही कि इनमें सबसे अच्छी विधि प्रभावात्मक विधि ही है। पर इस संदर्भ में पहली बात तो यह कि हम सभी शिक्षकों से आदर्श आचरण की अपेक्षा नहीं रख सकते और दूसरी बात यह है कि आज विद्यालयों में छात्रों की संख्या इतनी अधिक होती है कि आदर्श शिक्षक उन सबके सम्पर्क में नही आ पाते। आज की परिस्थितियों में यदि विद्यालयों के नियम बनाकर विद्यार्थियों से उनका पालन कराया जा सके। इसी को बहुत बड़ी उलपब्धि मानना चाहिए और उसके लिए दण्ड व्यवस्था आवश्यक है। पर छात्रों को दण्ड बड़ी सावधानी से देना चाहिए। उन्हें यह अनुभव होना चाहिए कि उन्हें जो भी दण्ड दिया जा रहा है उनकी स्वयं की भलाई के लिए दिया जा रहा है, किसी द्वेष द्वारा नहीं। किसी भी स्थिति में कठोर दण्ड देन उचित नहीं।

शिक्षा का अन्य पक्ष

जन शिक्षा– जन शिक्षा को गांधी जी ने बड़े व्यापक रूप से लिया है इसमें 6 से 14 वर्ष तक क बच्चों की सामान्य अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा दोनों को सम्मिलित किया है। प्रौढ़ शिक्षा को भी इन्होंने बड़े व्यापक रूप से लिया है। इसमें साक्षरता के साथ–साथ काम–धन्धों की शिक्षा को भी सम्मिलित किया है। गांधी जी के प्रयास से इस देश में जन शिक्षा का प्रसार प्रारम्भ हुआ।

स्त्री शिक्षा– गांधी जी ने स्त्री शिक्षा की आवश्यकता पर भी बहुत बल दिया था। इन्होंने स्त्रियों को पुरूषों की भांति किसी भी प्रकार की शिक्षा दने का नारा बुलन्द किया बस ये उन्हें गृह–विज्ञान की अतिरिक्त शिक्षा देने की बात कहते थे। पिछले 50 वर्षों में इस क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है आज स्थिति यह है कि आज स्त्रियाँ स्वयं अपने अधिकारों की मांग कर रही हैं हमामरी अपनी दृष्टि से अब देश में स्त्री–पुरूष सभी को सामान्य शिक्षा अनिवार्य रूप में और विशिष्ट शिक्षा बिना किसी भेदभाव के योग्यता के आधार पर सुलभ कराना चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षण– व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में गांधी जी के विचार नहीं कह जा सके। पहली बात तो यह है कि 6 से 14 वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों को हस्तशिल्पों, कृषि या अन्य कुटीर धन्धों में दक्ष नहीं किया जा सकता और दूसरी बात यह है कि आज ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में इतना अधिक विकास हुआ कि बिना उसके ज्ञान के हम इन कुटीर उद्योगों को अधिक सफलता के साथ नहीं चला सकते।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा– गांधी जी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे परन्तु विद्यालयों में किसी धर्मनिरपेक्ष की शिक्षा दिये जाने के पक्ष में नहीं थे। धर्म शिक्षा के नाम पर इन्होंने मानव मात्र की सेवा की, शिक्षा का समर्थन किया।

राष्ट्रीय शिक्षा– महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय शिक्षा के रूप मे जिस बेसिक शिक्षा का निर्माण किया था वह उस युग के अनुकूल अवश्य थी परन्तु वर्तमान में यह अर्थहीन हो चुकी है।

निष्कर्ष

पाठ्यक्रम में औद्योगिक व्यायाम को गांधी जी षामिल करतें हैं, उनका विचार है कि ''तेजी के साथ 5–7 मिनट तक लगातार किए जाने वाले व्यायामों की अपेक्षा उद्योग में यदि ठीक ध्यान रखा जाय तो देर तक और धीरे–धीरे जो व्यायाम होता है उसका महत्व षरीर–षास्त्र की दृश्टि से कम नहीं है।'' स्वामी जी विद्यार्थियों को सम्पूर्ण संसार का ज्ञान देने के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को आवश्यक माना है तथा उससे बालक देश की प्रत्येक दशा का प्रत्यक्ष अनुभव कर सके तथा नये सृजनशीलता का विकास होगा जो कि देश हित में लाभकारी होगा। उन्होंने स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम तथा खेलकूद का समर्थन किया है। स्वामी जी ने व्यक्ति के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास को ही षिक्षा का उद्देष्य लेकर चले थे इसीलिए उन्होंने पाठ्यक्रम में वे सभी विशय सम्मिलित करने को कहा जो उनकी लौकिक एवं आध्यात्मिक विकास में सहायक हो। आध्यात्मिक विशय के रूप में स्वामी विवेकानन्द जी ने पुराण, उपनिशद, धर्म, दर्षन, ज्ञानोपदेष, सत्संग एवं कीर्तन आदि पर बल दिया। स्वामी विवकानन्द प्राचीन भारतीय षिक्षण विधियों के समर्थक थे विषेश रूप से योग दर्षन की एकाग्रता पद्यति को वे सर्वोत्तम मानते थे। उनके अनुसार मनुश्य और पषु में मुख्य अन्तर यही हैं कि पषु अपने मन को एकाग्र नहीं कर सकते। इस प्रकार विवेकानन्द जी ने उस षिक्षण पद्धतियों पर बल दिया जो व्यक्ति के आध्यात्मिक, ज्ञानात्मक एवं भौतिक विकास में योगदान दे सके।

गाँधी जी शिक्षा को केवल साक्षरता प्रदान करना ही नहीं मानते थे उनके अनुसार–'शिक्षा द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होना चाहिए।'' गाँधी जी स्वावलम्बी शिक्षा के समर्थक थे उनके द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा में तकली द्वारा शिक्षा दिये जाने की योजना है वर्तमान शिक्षा पद्धति केवल व्यक्ति के जीवन के केवल एक पक्ष मस्तिष्क ही मुख्य रूप से प्रभावित करती है अन्य दो शरीर और आत्मा को छोड़ देती है। आज हमारी शिक्षा योजना में व्यावसायिक शिक्षा और समाजोपयोगी उत्पादक कार्य जैसे विचारों के द्वारा सुधार लाया जा रहा है जो गाँधी जी द्वारा शैक्षिक विचारों के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं। वर्तमान समय में शिक्षा अत्यन्त मंहगी और जनसाधारण के लिए सुलभ बनाने के बजाय दुर्लभ होती जा रही है। इस स्थिति में गाँधी जी के निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा पद्धति की सहायता से भावी पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त किये जाने की आवश्यकता है। गाँधी जी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर शिक्षा के समर्थक थे जो कि बालकों के युवा होने पर उन्हें रोजगार प्रदान कर सके।

सन्दर्भ सूची

- लाल, आर.बी. (2006). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त.* रस्तोगी पब्लिकेशन शिवजी रोड मेरठ.
- पाण्डेय, आर.एस. (2007). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक.* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा.
- सिंह, के. (2007). *भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास.* पब्लिकेशन्स गोविन्द प्रकाशन.
- पिलनिया, जी.पी. (2008). *यूपाज एजूकेशन डेवलपमेण्ट इन्डेक्स फॉर स्टेट.*
- गुप्ता, एस.पी. (2011). *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं.* इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.
- चौबे, एस.पी. (2011). *भारतीय शिक्षा दर्शन'.* दिल्ली, मैकमिलन एण्ड कम्पनी.
- पचौरी, जी. (2011). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक.* इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ.
- स्वामी विवेकानन्द (1955), *हे भारत! उठो! जागो,* नागपुर : रामकृष्ण मठ।
- चतुर्वेदी, गिरिधर शर्मा (1960), *'वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति',* पटनाः बिहार राष्ट्रभाषा परिषद।
- ब्रह्मनन्द स्वामी (1965), *श्री रामकृष्ण उपदेश,* नागपुर : रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, 12
- शुक्ल, अलका (1966), *पराशर स्मृति, सामाजिक धार्मिक एवम् राजनैतिक विश्लेषण,* दिल्लीः परिमल पब्लिकेशन्स।
- चतुर्वेदी प्रबोध (1968), *गीता–प्रबोध,* इलाहाबादः गीता प्रबोध प्रकाशन, 16–ए महात्मा गाँधी मार्ग –1
- गम्भीरानन्द स्वामी (1968), *श्री रामकृष्ण भक्त मालिका, भाग–1,* नागपुरः रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली।